हैरी पॉटर : यथार्थ, समस्या और संभावना

❑ आशुतोष मोहन

बच्चों की दुनिया सपनों से बुनी दुनिया है। जब कभी ये सपने गायब होते हैं या कम हो जाते हैं या फिर सपने मर जाते हैं तो हमारे जीवन को ठूंठ हो जाने में देर नहीं लगती । यह लेख हैरी पॉटर पर छपी पुस्तकों और उस पर बनी फिल्मों का विश्लेषण नहीं है बल्कि यहां चेष्टा की गई है कि हैरी पॉटर से जो दुनिया रची गई है उसे समझा जाए और यदि इस दुनिया का कोई मूल्य है तो उसे पहचाना जाए। इधर जिन तथाकथित विचारों का शोर है उनके प्रति इस लेख में जागरुकता तो है लेकिन आलेख उन विचारों की बैसाखी पर टिका नहीं है। कोशिश यही की गई है कि सामान्य भाषा में जटिल विचारों को व गहन समस्याओं को समझ लिया जाए। इसीलिए अपनी बात को तीन भागों में रखा गया है जिनका आपस में अन्तर्सम्बन्ध है, जो द्वंद्वात्मक हैं और तार्किक रूप से लेख को संरचना की दृष्टि प्रदान करते हैं।

पहली बातचीत

आशुतोष - मेघा ! तुमने बचपन में कौन-कौन सी पत्रिकाएं पढ़ी हैं।

मेघा - बालहंस ...। कुछ पुस्तकों के नाम भी लूंगी 'लिटिल मरमेड', 'सिंदबाद', 'ईसपूस फैबल्स' इत्यादि।

पल्लव - और कार्टून ?

मेघा - (तुरन्त कहा) टॉम एण्ड जेरी, पॉवर पफ, डेक्सटर,अलादीन। मैंने रामायण भी एनीमेटेड वर्जन वाली देखी है, बहुत बढ़िया थी।

आशुतोष - क्या टी. वी. वाली रामायण से भी बेहतर ?

मेघा - हां, जरूर । खासतौर पर वॉयस ओवर में, मैंने बहुत-सी मूवीज भी देखी हैं जैसे स्टुअर्ट लिटिल, फाइंडिग नीमो, इनक्रडिबल और भी कई।

आशुतोष - और तुम्हें किन-किन चीजों में दिलचस्पी है ?

मेघा - (बिना सोचे झट से) कम्प्यूटर, इंटरनेट, बायो, अंग्रेजी।

पल्लव - चलो अब हैरी पॉटर पर आते हैं ।

मेघा - (तत्काल) मैंने दो मूवी और तीन किताबें पूरी-पूरी पढ़ी हैं।

आशुतोष - इनमें सबसे अच्छे चरित्र तुम्हें कौन से लगे ?

मेघा - हेग्रिड और हैरी । हां, हरमैनी भी। हेग्रिड तो फादर फिगर है या बड़े भाई जैसा। दानव है तो क्या हुआ ? और हैरी और हरमैनी तो बिल्कुल हीरो हैं।

पल्लव - अब अगले प्रश्न का उत्तर तुम्हें जरा संभलकर देना है। अगर मौका मिले तो क्या तुम हॉग्वर्डस जाना चाहोगी ?

मेघा - (जैसे कूद पड़ी) क्यों नहीं। क्या ऐसा हो सकता है ? और अगर नहीं भी, तो भी प्रस्ताव शानदार है।

आशुतोष - क्या तुम जादू में विश्वास रखती हो ?

मेघा - बिल्कुल नहीं।

दूसरी बातचीत

जतिन - अंकल ! क्या मैं बच्चा नहीं हूं ? मैंने मेडिकल की पढ़ाई तो इसी साल शुरू की है लेकिन कॉमिक्स, किताबों और फिल्मों से मुझे भी खूब प्यार है, मुझसे भी तो पूछिए।

आशुतोष - क्यों नहीं । यह विषय ही इतना आकर्षक है। चलो बताओ तुमने बचपन में क्या-क्या पढ़ा ? और टी.वी. पर क्या देखना पसंद करते हो ?

जतिन - मैंने पत्रिकाएं तो ज्यादा नहीं पढ़ीं। क्या ऐसी पत्रिकाएं आती हैं ? हां, अलादीन, सिंदबाद, पंचतंत्र और बहुत कुछ पढ़ा था। कार्टून्स में ...डोनाल्ड डक व टेल स्पिन के बल्लू का जवाब नहीं । मैंने अलादीन देखा भी है और फिल्मों में श्रेके जिसे कई ऑस्कर मिले थे, व रामायण और इनक्रेडिबिल। आपको पता है इसमें आवाज शाहरूख खान की है। और रामायण का एनीमेशन लाजवाब है।

पल्लव - हैरी पॉटर के बारे में क्या कहोगे ?

जतिन - मैंने भी तीन किताबें पढ़ी हैं और फिल्में भी देखी हैं। फिल्में तकनीकी दृष्टि से अद्‌भुत हैं। ये लोग कैसे, जो बात कही गई है, उसे पर्दे पर उतार देते हैं !

आशुतोष - तुम्हें कौनसे चरित्र प्रभावी लगे ?

जतिन- हैरी, हरमैनी व विशेष तौर पर हेग्रिड। हर इंसान चाहेगा कि वह जब भी गलती करे या संकट में फंस जाए तो हेग्रिड आसपास मौजूद हो। वो भयानक है लेकिन लवेबल है।

पल्लव - क्या तुम जादू मानते हो ?

जतिन - नहीं, यह तो सिर्फ आंखों का धोखा है। यू नो ट्रिक।

पल्लव - आखिरी प्रश्न ! क्या तुम जाओगे हॉगवर्ड्स ?

जतिन - हां, क्यों नहीं ? आकर पूरी कर लूंगा मेडिकल की पढ़ाई।

तीसरी बातचीत

पल्लव - सौम्या ! तुमने बचपन में कौनसी पत्रिकाएं... और पुस्तकें भी पढ़ी हैं ?

सौम्या - टिंकल, सी.डब्ल्यू, चम्पक, चकमक और पुस्तकों में रॉबिन्सन क्रूसो, हाइडी, थ्री लिटिल वीमन, और हां ... रस्किन बांड भी। इनसे मैं और मेरी एक सहेली मसूरी में इनके घर जाकर मिल भी आए थे। और तभी हमने यह जाना कि ये न केवल बच्चों की कहानियां ही लिखते हैं बल्कि उनसे बहुत लगाव भी रखते हैं ।

पल्लव - और कार्टून फिल्में ?

सौम्या - टॉम एण्ड जेरी, मिकी मिनी, डोनाल्ड डक और फिल्मों में 'रामायण', 'एण्डस', 'चिकन रन', 'होम अलोन' और यह भी कहूंगी कि मुझसे ज्यादा ये सभी कार्टून फिल्म्स मेरे पिताजी को ज्यादा अच्छी लगती हैं। वे जोर-जोर से हंसते हैं और फिर मां यह बोलती है कि न जाने इन दोनों को इन बचकानी चीजों में क्या मजा आता है।

पल्लव -चलो अब जरा हैरी पॉटर के बारे में कुछ बताओ।

सौम्या - मैंने तीन किताबें पढ़ी हैं जिनमें से एक मित्र से मांगी और दो पापा ने फुटपाथ से खरीद कर दीं। फिल्में हम दोनों ने सभी देखी हैं।

पल्लव - तुम्हारे फेवरेट केरेक्टर्स ?

सौम्या - सभी अच्छे लगते हैं लेकिन खास तौर पर हेग्रिड और शायद हेग्रिड के कारण ही मैं अपने पापा को उनकी रीछ जैसी दाढ़ी में भी टॉलरेट करती हूं।

पल्लव - क्या तुमने जादू देखा है ?

सौम्या - हां कई बार ! सिर्फ हाथ की सफाई है लेकिन मजेदार होता है।

पल्लव - क्या तुम हॉगवर्डस की स्टूडेन्ट बनना चाहोगी ?

सौम्या - क्यों नहीं और मुझे पता है कि मेरे पापा भी पीछे-पीछे चले आएंगे।

चौथी बातचीत

आशुतोष - चलिए हिमांशु जी आप बताइए क्या-क्या पढ़ा बचपन में ?

हिमांशु - पराग, टिंकल और बहुत सारी कॉमिक्स, जिसमें फैंटम मेरा प्रिय है। कार्टून्स में टॉम एण्ड जेरी, जंगल बुक, टेल स्पिन, और हां डोनाल्ड, जिसको जब गुस्सा आता है तब उसका कोई सानी नहीं । पुस्तकों में 'पापा जब बच्चे थे', 'फिर गधे से गधा', 'नाना के घर'।

आशुतोष - क्या किताब थी 'पापा जब बच्चे थे' जिसने नहीं पढ़ी वह गधे से गधा ही रहा। अच्छा हैरी पॉटर के बारे में बताएं।

हिमांशु - बहुत मजा आया। मतलब कि पढ़ने में, क्या तिलिस्म

है और क्या जादुई दुनिया बनाई है। आदमी बंध जाता है।

प्रज्ञा - (बीच में कूदते हुए) मैंने भी 'चंदोबा' पढ़ा है और 'चम्पक' भी।

हिमांशु - (काटकर) इसकी बात पर ज्यादा ध्यान न दें क्योंकि इसके बचपने पर पूरी एक पुस्तक या शोध ग्रन्थ लिखना पड़ेगा।

आशुतोष - (पल्लव के कान में - प्रज्ञा हमेशा तीस साल की दादी की तरह एक्ट करती है और इसने शायद सारी आवांगर्द फिल्में जज्ब कर ली हैं। क्या इस नाम की कोई पुस्तक हैं 'मां जब बच्ची थी'। अभी मत बोल देना वरना ये पूरा स्त्रीवाद पेल देगी।)

निधि - (जोर से) मैंने हर तरह की मेग्जीन पढ़ी है। और यू नो 'नोडी' 'एनिड ब्लिटन', 'हिचकॉक' बट नो कॉमिक्स। छोटे बच्चों के लिए होती हैं।

पल्लव - (आशुतोष से कान में - इनके बारे में आपका क्या ख्याल है ?)

आशुतोष - (वही, यह सिर्फ चालीस की दादी हैं और खुदा के वास्ते बात आगे मत खींचना वरना पुस्तकों पर पूरा प्रवचन चालू आहे)

विपिन - मैंने 'स्टुअर्ट लिटिल और 'जंगल बुक' देखी हैं। मैंने फिर 'गधे से गधा' भी पढ़ी है। मुझे याद है और मैं हैरी पॉटर पर भी बोलूंगा। आप हेग्रिड को जानते हैं ? हैरी पॉटर में एक चरित्र है। लम्बा-चौड़ा, भीमकाय। जब कभी डरावना सपना आए तो हेग्रिड को याद कर लें।

पल्लव - मैं भी कूदता हूं । मैं पूजा पाठ की तरह नंदन और बाल भारती पढ़ता था। कॉमिक्स भी पढ़ लेता था। लेकिन चंपक कभी नहीं। नानाजी के घर मां के बचपन में पढ़ी सारी पुरानी नंदन, बाल भारती, पराग रखी थीं, वे भी हर छुट्टियों में चाट-चाटकर पढ़ीं। किताबें भी पढ़ीं कई सारी जीवनियां भी, विशेष कुछ नहीं।

आशुतोष - आजकल सैकण्ड ईयर में एक कविता पढ़ा रहा हूं उसमें 'मेन्ड्रेक रूट' का जिक्र है बच्चे उसके बारे में कुछ पूछते ही नहीं, सभी ने हैरी पॉटर देखी है चलो छोड़ो। भई मैं तो जाऊंगा हॉगवर्ड्स, बहुत हो गया पढ़ना और पढ़ाना।

हिमांशु और पल्लव - (एक साथ) हम भी जाएंगे (पल्लव -चुपके से : दादियों के बिना पोतों का क्या अस्तित्व ?)

आशुतोष - भई फिर भी पूछ लो।

निधि और प्रज्ञा -चल पड़ेंगे, जरा 'अलूफ' होते हुए। कहीं तो चलेंगे । सुखाड़िया सर्किल से तो अच्छा ही होगा

●

वैश्वीकरण के इस दौर में आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक सभी मुद्दे सत्ता विमर्श से जुड़ जाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि छोटी से छोटी घटना को भी अनदेखा नहीं किया जाता यानी एप्रोप्रिएशन सम्पूर्ण होता है। और यही वस्तुत: हर नई घटना के प्रति संवेदनशीलता दर्शाकर उसे भी या तो समाहित कर लेता है या दबा देता है। कुछ समय से इस राजनैतिक शतरंज का एक पैंतरा उभरकर सामने आया है, राजनैतिक व धार्मिक विमर्श

के क्षेत्र में रूढ़िवाद और संकीर्णता अब अपने नग्न रूप में सामने है। धार्मिक रूढ़िवाद, संकीर्ण राजनीति या फासीवाद का परिचायक है और ठीक इसका उलटा भी एक सीमा तक सही है क्योंकि पश्चिम की अर्थ व्यवस्था एक बड़ी सीमा तक सेचुरेशन को पहुंच गई है, नये बाजारों की खोज व उनमें पैठ बैठाना ही आज का सबसे बड़ा राजनैतिक सवाल है। ऐसा नहीं है कि इसके लिए पश्चिमी ताकतों को बहुत मेहनत करनी पड़ रही है, वे जानते हैं कि वैश्वीकरण के आडम्बर में उन्होंने सीमाओं को पहले ही 'पोरस' (छिद्र) कर दिया है। इरादा यह है कि कब्जा भी हो जाए और अहसास भी न हो। इस वर्चस्व को पाने के लिए सांस्कृतिक औजार अचूक सिद्ध हो रहे हैं।अत: संस्कृति के धरातल पर खेले गए खेल या धर्म के प्रति आस्था से भरे व परंपरा में डूबे उद्घोष केवल देखने भर में मासूम हैं अगर तह तक पहुंचें तो मालूम होगा कि यह मुखौटा कैसी राजनैतिक आर्थिक चाल है।

हैरी पॉटर जैसी मजेदार तिलिस्म भरी पुस्तक के प्रति भी पश्चिम में एक बड़ा जखीरा ऐसी वेब साइट्स का है जो इस रचना को न केवल अधर्मी करार देती हैं बल्कि ईसाइयत के लिए (विशेष तौर पर रूढ़िवादी कॅथोलिक) कुफ्र से कम नहीं आंकती। ये वेब साइट्स हैरी पॉटर में गढ़ी गई रहस्यमयी चमत्कारिक, मजेदार दुनिया को जादू टोने की कारगुजारी तक सीमित करती हैं, यहां तक कि उनका मानना है कि ऐसी बात भी खुदा या कुदरत के काम में हस्तक्षेप करने जैसा अपराध है। कोई भी व्यक्ति इन वेबसाइट्स के चिन्तन से यह समझ सकता है कि तर्क की यह भाषा मानवीय संवेदनाओं को धार्मिक रूढ़िवाद के आडम्बर में फंसाकर इक्कीसवीं सदी में मानो 'विच हंटिग' के दिनों की याद दिलाना चाहती है। ये एक ऐसा परिदृश्य या खाका तैयार करती है जहां अहसास होता है कि हैरी पॉटर पढ़ते ही किसी का दोजख में पहुंच जाना तय है और सभी मासूम बच्चे-बच्चियां लम्बे काले चोगे पहनकर आम स्कूलों की जगह स्वत: 'विच क्राफ्ट' में डिग्री लेकर झाड़ुओं की सवारी गांठते हुए नजर आएंगे।

झाड़ू वाला मेटाफर यहां बहुत उपयुक्त प्रतीत होता है और अगर विचार करें तो सही मायनों में आत्मघाती है। आजकल के बच्चे हम सबसे, जब हम इतने बड़े थे, बहुत होशियार व चतुर हैं, उन्हें यह पता है कि झाड़ू कभी भी 'लेविटेट' नहीं कर सकती। हां, महेश योगी जरूर जार्ज हैरिसन को 'हवाईयात्रा' करा सकते थे। बच्चे यथार्थ व तिलिस्म के अन्तर को बखूबी जानते हैं और एक जिम्मेदार समाज को अपने भविष्य की पीढ़ी पर भरोसा दिखाना भी चाहिए।

हैरी पॉटर की रिकार्ड तोड़ बिक्री के पीछे चाहे कोई भी मार्केटिंग स्ट्रेटेजी रही हो, एक बात तो माननी पड़ेगी कि यह कोई आइसक्रीम या लट्टू नहीं है जिसे चखा, चलाया और फेंक दिया जाए। हैरी पॉटर शृंखला मोटी-मोटी किताबों से बनी है, जिन्हें दुबारा खरीदने के लिए पहली वाली का आनन्द लेना जरूरी है और यह भी तय है कि शृंखला की नई कड़ी को पढ़ते ही पिछली पढ़ना जरूरी लगेगा।

●

'इतिहास के अन्त' का जुमला सपनों और सपनों की दुनिया को दफन कर देता है। बीसवीं सदी का राजनैतिक परिवेश व उससे उपजी या गढ़ी गई सामाजिक संरचना, साहित्य को एक भाषाई अमली जामा पहना कर ऐसे विमर्श में तब्दील कर देता है जहां रसिक का कोई स्थान नहीं अपितु सिद्धांत व विश्लेषण की ही अनुगूंज है। ऐसा भी महसूस होता है कि अब साहित्य ही समाजशास्त्र हो गया है। यह स्थिति केवल खतरनाक ही नहीं बल्कि भयावह भी है। यह भी तो कहा जा रहा है और मान ही लिया गया है कि लेखक का भी अन्त हो गया है - तो क्या पाठक ही लेखन करवाएगा, कंज्यूमर इज द किंग ? समूचा परिदृश्य एक 'रेडट्रैप' की तरह है, विशेषत: गरीब देशों व गरीब पाठकों के लिए। इस बीच अगर हैरी पॉटर जैसी कृति उभरे जो न केवल सपने दिखाए, सपने पढ़ाए, बनाए व गढ़े बल्कि सपने जीने का हौसला भी दे तब हमें यह अहसास होता है कि लेखक और लेखन कभी मरते नहीं और मरे भी नहीं हैं।

हैरी पॉटर की यही एक विशेषता कि इसका पाठ हमें सपने देखने का सम्बल दे, ही पर्याप्त है और यहां तो एक ऐसे पाठ की रचना की गई है जो जान बूझकर ब्रेख्तियन ऐलियनेशन इफेक्ट की स्थापना करती है। अभिप्राय यह है कि जो दुनिया हम हैरी पॉटर में देखते व महसूस करते हैं, उसका हमें हर पल यह अहसास भी रहता है कि यह जादू है 'यू नो ट्रिक'। हॉगवर्ड्स में सभी दाखिला लेना चाहते हैं परन्तु पॉटर पढ़ने वाला कोई भी छात्र अपनी कक्षा में कभी अनुत्तीर्ण हो ही नहीं सकता, यह शर्तिया है। पॉटर शायद आशा की वह समाजवादी किरण तो नहीं बन सके लेकिन इस निरंतर अमानवीय मशीनीकृत होती सभ्यता में मानव को फिर केंद्र बिन्दु में स्थापित करने की मजबूत पहल करता है। इसलिए धार्मिक रूढ़िवाद आहत है, खुदा यीशु जहां थे-वहां और उन ऊंचाइयों पर एक अदना सा चशमिश हैरी भी पहुंच जाए तो दुनिया तो पलटेगी ही।

पार्श्व में :

(प्रज्ञा और निधि एक ही स्वर में) बुक कैन नेवर मिसगाइड यू। ◆

नोट : बातचीत में आए सभी मित्रों से बात करने का न्यौता सभी के लिए खुला है।